तो उनमे से एक बोली हम चौथ माता का व्रत व पूजन कर रही हैं। बिछुड़े का मिलन होता है, बांझ को पुत्र प्राप्त हो जाता है । इस पर बहू ने कहा कि मेरे भी पति को परदेस गये काफी समय हो गया है, मैं भी चौथ माता का व्रत करना चाहती हूँ ।लेकिन मेरी सास मुझे बाहर आने ही नहीं देती तब मुझे कैसे पता लगेगा की चौथ कब है ? इस पर औरतों ने कहा कि तुम रोजाना एक डिबिया में गेहूँ का दाना रखती जाना जिस दिन तीस दाने पूरे हो जावें उसी दिन व्रत रखके शाम को चौथ माता की पूजा करके चन्द्रमा को अर्घ्य देकर फिर खाना खा लेना ।साहुकार की बहु कहे अनुसार व्रत करने लग गई व्रत करते–करते काफी समय बीत गया ।तो चौथ माता ने सोचा कि यदि इसकी नहीं सुनी तो अपने को कोई पूजेगा नहीं तब चौथ माता ने साहुकार के बेटे को सपने में जाकर कहा कि साहुकार का बेटा सो रहा है या जाग रहा है।उसने कहा न सो रहा हूँ न जाग रहा हूँ चिन्ता में पड़ा हूँ।इस पर चौथ माता ने कहा कि अब चिन्ता छोड़ और तेरे घर जा कर सब की सुध ले।उसने कहा कि मैं कैसे जाऊँ मेरा कारोबार बहुत फैला हुआ है। तब चौथ माता बोली सुबह उठकर नहा धोकर दुकान जा कर चौथ बिन्दायक जी का नाम ले कर घी का दीपक जलाना तेरा सारा काम सुलझ जायेगा।सुबह उसने वैसा ही किया देखते–देखते ही सारा हिसाब किताब हो गया और उसने घर जाने की तैयारी कर ली।घर को रवाना हुआ तो रास्ते में एक साँप जा रहा था तो उसने साँप को सिसकार दिया।

साँप ने गुस्से में आकर कहा कि मैं तो अपनी सौ साल की उम्र पूरी करके मुक्ति पाने जा रहा था, तूने बाधा डाल दी, अब मैं तुझे डसुँगा, इस पर साहुकार के बेटे ने कहा कि मैं बारह साल से मेरी माँ व पत्नी से मिलने जा रहा हूँ, उनसे मिलने के बाद डस लेना ।तब साँप बोला कि तू घर जाकर पंलग पर सो जायेगा तब उसने कहा कि मैं अपनी औरत की चोटी नीचे लटका दूँगा ।उस पर चढ़ कर आ जाना।घर पहुँचा तो वह उदास था ।बेटा कुछ बोला नहीं लेकिन उसकी औरत होशियार थी सब बात पता करके उसने कमरे की एक सीढ़ी पर दूध, दूसरी पर चूरमा, बालू रेत, इत्र, फूल आदि सात सीढ़ियों में सात वस्तु रख दी। आधी रात को फुफकारता हुआ साँप आया और सभी वस्तुओं का